Title Page

Hamara Khuda

ہمارا خدا

पुस्तक का नाम	*हमारा ख़ुदा*
लेखक	*हाफ़िज़ डा॰ सालेह मुहम्मद अलादीन*
अनुवादक	*अलीहसन एम.ए.एच.ए*
संख्या	
प्रथम संस्करण, हिन्दी	*अप्रैल 2011 ई.*
प्रकाशन	*नज़ारत नश्रो इशाअत, क़ादियान-143516*
प्रैस	*फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान*

Name of Book	***Hamara Khuda***
By	*Hafiz Dr.Saleh Mohammad Alladin*
Translated	*Ali Hasan M.A.H.A*
Copies	
1st Edition Hindi	*April 2011.*
Published By	*Nazarat Nashro Ishat*
	Qadian-143516, INDIA
Printed at	*Fazle Umar Printing Press Qadian*

ISBN

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क

कार्यालय

नज़ारत दावत इलल्लाह/इस्लाह व इरशाद

मुहल्ला अहमदिया क़ादियान-143516

ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)

दूरभाषछ - 01872-220757, 222763

प्रात: 10 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक टोलफ्री नं.

18001802131

हमारा ख़ुदा

लेखक

हाफ़िज़ डा॰ सालेह मुहम्मद अलादीन

हमारा ख़ुदा

मेरी रात दिन बस यही इक सदा है
कि इस आलमे कौन का इक ख़ुदा है

उसी ने है पैदा किया इस जहाँ को
सितारों को सूरज को और आस्माँ को

वह है एक उसका नहीं कोई हमसर
वह मालिक है सबका वह हाकिम है सब पर

न है बाप उसका न है कोई बेटा
हमेशा से है और हमेशा रहेगा

नहीं उसको हाजत कोई बीवियों की
ज़रूरत नहीं उसको कुछ साथियों की

हर एक चीज़ पर उसको क़ुदरत है हासिल
हर इक काम की उसको ताक़त है हासिल

पहाड़ों को उसने ही ऊँचा किया है
समन्दर को उसने ही पानी दिया है

ये दरिया जो चारों तरफ़ बह रहे हैं
उसी ने तो क़ुदरत से पैदा किये हैं

समन्दर की मछली हवा के परिन्दे
घरेलू चरिन्दे बनों के दरिन्दे

सभी को वही रिज़्क पहुँचा रहा है
हर इक अपने मतलब की शै खा रहा है

हर इक शै को रोज़ी वह देता है हर दम
ख़ज़ाने कभी उसके होते नहीं कम

वह ज़िन्दा है और ज़िन्दगी बख़्शता है
वह कायम है हर एक का आसरा है

कोई शै नज़र नहीं उसके मख़्फी
बड़ी से बड़ी हो कि छोटी से छोटी

दिलों की छुपी बात भी जानता है
बदों और नेकों को पहचानता है

वह देता है बन्दों को अपने हिदायत
दिखाता है हाथों पे उनके करामत

है फ़रियाद मज़्लूम की सुनने वाला
सदाक़त का करता है वह बोल बाला

गुनाहों को बख़्शिश से है ढाँप देता
ग़रीबों को रहमत से है थाम लेता

यही रात दिन अब तो मेरी सदा है
यह मेरा ख़ुदा है यह मेरा ख़ुदा है

(कलाम-ए-महमूद)

प्राक्कथन

धर्म का केन्द्र बिन्दु अल्लाह तआला की हस्ती है। मनुष्य के जीवन का उद्देश्य यह है कि मनुष्य अल्लाह तआला के बारे में ज्ञान प्राप्त करे और उसकी इबादत (उपासना) करे और उसकी आज्ञापालन करे। ख़ुदा तआला की कृपा से आदरणीय हाफ़िज़ सालेह मुह मद अलादीन साहिब (भूतपूर्व प्रोफेसर अन्तरिक्ष विज्ञान विभाग, उस्मानिया यूनिवर्सिटी हैदराबाद, भूतपूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष आन्ध्रप्रदेश, भूतपूर्व अमीर (प्रमुख) जमाअत अहमदिया सिकन्दराबाद, भूतपूर्व सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान) ने जलसा सालाना क़ादियान 1998 ई. के अवसर पर 'हमारा ख़ुदा' शीर्षक पर भाषण दिया था इस भाषण में क़ुरआन मजीद की दृष्टि से सरल भाषा में अल्लाह तआला की विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में हज़रत मिर्ज़ा बशीरूद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की नज़्म 'मेरी रात-दिन बस यही इक सदा है। कि इस आलम-ए-कौन का इक ख़ुदा है।' से लाभ उठाया गया है। लेख से पूर्व यह प्यारी नज़्म प्रस्तुत है।

अल्लाह तआला की विशेषताओं का विषय बहुत महत्वपूर्ण है अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है कि

وللہ الاسماء الحسنٰی فادعوہ بہا (الاعراف آیت ۱۸۱)

'अल्लाह के बहुत से अच्छे विशेषणात्मक नाम हैं अत: तुम उनके द्वारा उससे दुआयें किया करो' हमारे भूतपूर्व इमाम हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब रहमहुल्लाहु तआला ने कई ख़ुत्बात-ए-जुमा में अल्लाह तआला की विशेषताओं पर लेक्चर दिया था।

हिन्दी पाठकों के लिए इसका हिन्दी अनुवाद अलहीहसन साहब एम.ए.एच.ए. ने किया है जिसको दफ्तर नशरो इशाअत क़ादियान प्रकाशित कर रहा है ताकि अधिक से अधिक लोग इमाम जमाअत अहमदिया के जीवनदायक लैक्चरों से लाभावित्त हो सकें।

ख़ाकसार

नाज़िर नशरो इशाअत

हमारा ख़ुदा

भाषण जलसा सालाना क़ादियान 05 दिसम्बर 1998 ई.

हाफ़िज़ डा॰ सालेह मुहम्मद अलादीन साहिब

(भूतपूर्व प्रो. अन्तरिक्ष विज्ञान विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

अनुवाद– अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, उसके बहुत से विशेषणात्मक नाम हैं। मैं अल्लाह का नाम लेकर (पढ़ता हूँ) जो अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। हर प्रकार की स्तुति का केवल अल्लाह ही अधिकारी है जो सब लोकों (जहानों) का रब्ब है। अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। जज़ा (अच्छा बदला देने) तथा सज़ा (दण्ड देने) के समय का मालिक है। (हे अल्लाह !) हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ से ही सहायता माँगते हैं। हमें सीधी राह पर चला। उन लोगों की राह पर (चला) जिन पर तूने इन्आम किया (अर्थात जिन को पुरस्कार प्रदान किया) जिन पर बाद में न तो तेरा गज़ब (प्रकोप) उतरा और न वे (बाद में) गुमराह हुए।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى (طٰہٰ آیت ۹)

अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं। उस के बहुत से सुन्दर नाम हैं।

मेरी रात दिन बस यही इक सदा है — कि इस आलमें कौन का इक ख़ुदा है
उसी ने है पैदा किया इस जहाँ को — सितारों को सूरज को और आस्माँ को
वह है एक उसका नहीं कोई हमसर — वह मालिक है सबका वह हाकिम है सब पर

प्रस्तावना:– ख़ाकसार के भाषण का शीर्षक है हमारा ख़ुदा और ख़ाकसार को गाइड लाइन दी गई है कि अल्लाह तआला की हस्ती और विशेषताओं के बारे में नवमुबाइन को सामने रखते हुए सरल भाषा में इस लेख को बयान करूँ ।

यह सारी दुनिया और हम सब सदा से नहीं हैं। धरती और आकाश को, सूरज चाँद सितारों को सारे ब्रह्माण्ड को हम सबको जिसने पैदा किया वह हमारा ख़ुदा है। उसका निजी नाम **अल्लाह** है और उर्दू में हम उसे ख़ुदा कहते हैं। ख़ुदा के अर्थ हैं ख़ुद आ। अर्थात वह ऐसा अस्तित्व है जिसे किसी ने पैदा नहीं किया बल्कि हमेशा से स्वयं ही चला आता है। एक समय था जबकि केवल अल्लाह था। उस के अतिरिक्त कुछ नहीं था। उसने सब कुछ पैदा किया और हर चीज़ को बनाया वह बड़ी शान और बड़ी क़ुदरतों वाला है। वह बहुत बड़ी शान वाला है। इसलिए हम अल्लाह तआला कहते हैं। तआला के अर्थ हैं बुलंद। अल्लाह तआला समस्त दोषों से रहित है और सभी गुण अपनी पूर्णता के साथ उस में पाये जाते हैं। उसने हमको और समस्त ब्रह्माण्ड को बिना किसी उद्देश्य के पैदा नहीं किया बल्कि इस उद्देश्य से पैदा किया है कि हम उसको पहचानें, उसकी इबादत करें और तरक्की करें और उसकी पवित्र विशेषताओं को अपनाएँ।

अल्लाह तआला हमारा ख़ुदा और सारी सृष्टि का ख़ुदा है।

⊙ अल्लाह तआला की सत्ता

अल्लाह तआला की सत्ता की क्या वास्तविकता है हम नहीं जानते। हाँ अल्लाह तआला का विशेषणात्मक नाम अल-ग़ैब है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''बात यह है कि जैसे अल्लाह तआला प्रत्यक्ष होने के बावजूद अप्रत्यक्ष और अप्रत्यक्षतम है और इसलिए 'अल-ग़ैब' भी उसका नाम है।''

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-2 पृष्ठ 151)

अत: अल्लाह तआला परोक्ष का भी ज्ञाता है उसकी व्याख्या करते हुए आप फ़रमाते हैं:-

''आलिमुल-गैब'' है अर्थात अपनी सत्ता को स्वयं जानता है। उसकी

सत्ता पर कोई पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। हम सूरज और चाँद और हर एक सृष्टि को पूर्णत: देख सकते हैं। परन्तु ख़ुदा को पूर्णत: देखने से अक्षम हैं'' (रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-10 पृष्ठ 373, इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी)

ख़ुदा की सत्ता कैसी है ? उसके बारे में क़ुरआन मजीद में आता है कि :-

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ○ (الانعام آیت:۱۰۳)

अर्थात नज़रें उस तक नहीं पहुँच सकतीं लेकिन वह नज़रों तक पहुँचता है और वह लतीफ़ और ख़बीर (अर्थात बहुत ही सूक्ष्म और बहुत ही जानने वाला) है। नज़रें ख़ुदा तआला तक इसलिए नहीं पहुँच सकतीं कि वह अत्यन्त सूक्ष्म है लेकिन चूँकि वह बहुत जानने वाला भी है और जानता है कि इन्सान की रूहानी (आध्यात्मिक) ज़िन्दगी उसके ब्रह्मज्ञान के बिना संभव नहीं। इसलिए वह स्वयं अपनी ओर से ऐसे साधन पैदा कर देता है कि इन्सान को ख़ुदा का ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो सके।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ○ (الانعام آیت ۱۰۳)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी किताब ''**हमारा ख़ुदा**'' में लिखते हैं। "لاتدرکه الابصار"

''नज़रें उस तक नहीं पहुँच सकतीं'' के सम्मुख ख़ुदा की विशेषता 'लतीफ़' को रखा गया है ताकि यह स्पष्ट हो कि बुद्धि के द्वारा ख़ुदा का प्रत्यक्ष बोध या अनुभूति होना इसलिए असंभव है कि वह अत्यन्त सूक्ष्म है और وهويدرك الابصار (व हुवा युदरिकुल अब्सार) के सम्मुख विशेषता ख़बीर को रखा गया है अर्थात यह कि ख़ुदा स्वयं अपने पहचाने जाने का प्रबन्ध करता है क्योंकि वह अत्यन्त सूक्ष्म है।'' (हमारा ख़ुदा पृष्ठ-32)

संसार की चीज़ों पर और उनकी पैदाइश पर ग़ौर करके हम सिर्फ इस हद तक पहुँच सकते हैं कि इस संसार को बनाने वाला कोई ख़ुदा होना चाहिए। लेकिन यह विश्वास कि ख़ुदा है, इस तरह हासिल होता है कि ख़ुदा स्वयं कहे कि मैं मौजूद हूँ। अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों (अवतारों) को भेज कर हमको बताता है कि वह मौजूद है। अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों से

बातें करता है और उनके द्वारा अपने आपको प्रकट करता है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हर एक क़ौम में उसने अपने पैग़म्बर भेजे और सारे पैग़म्बरों ने अपने अनुयायियों को यही बताया कि हमारा पैदा करने वाला एक ख़ुदा है और वह एक ही है और हमको उसकी इबादत(उपासना) करनी चाहिए।

अल्लाह तआला के पैग़म्बरों के द्वारा हमको अल्लाह तआला की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होता है। हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन मजीद अवतरित हुआ और उसमें अल्लाह तआला ने अपनी विशेषताओं के बारे में विस्तार से बताया है। एक हदीस शरीफ़ में अल्लाह तआला के निन्यानवे (99) विशेषणात्मक नामों का उल्लेख है और उसमें लिखा है कि जो उनको याद करेगा और उनका द्योतक बनने की कोशिश करेगा (अर्थात अल्लाह तआला की विशेषताओं को अपनाने की कोशिश करेगा) वह जन्नत (स्वर्ग) में प्रवेश करेगा।

(तिर्मिजी किताबुददावात भाग जामिउद्दावात दीकतुस्सालिहीन अज़ मालिक सैफ़ुर्रमान साहिब पृ 8)

वर्तमान युग में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार पैदा होने वाले हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम और उनके ख़ुल्फ़ा-ए-किराम ने हमें ख़ुदा तआला की विशेषताओं की ओर ध्यानाकर्षित किया है। ख़ुदा तआला की विशेषताओं के द्वारा ही हमको अल्लाह तआला की विशेषता और उपकार का पता चलता है और दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा होती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी (सहचर) हज़रत शेख़ याकूब अली साहिब इर्फ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी किताब 'अस्माउल-हुस्ना' में लिखते हैं कि ''पूर्णत: आज्ञापालन और इबादत (उपासना) की रूचि और रसिकता तब तक इन्सान के अन्दर पैदा नहीं हो सकती जब

तक उसे अल्लाह की विशेताओं और उपकारों के बारे में ज्ञान न हो। और अल्लाह तआला की विशेषताओं और उपकारों की जानकारी और ज्ञान, उसकी विशेषताओं के ज्ञान पर आधारित है। इसलिए अल्लाह तआला की पूर्ण आज्ञाकारिता और इबादत (उपासना) के लिए आवश्यक है कि ख़ुदा की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त हो ताकि इन्सान इस विषय को समझ सके जो

وللہ الاسماء الحسنیٰ فادعوہ بہا

(अल्लाह के बहुत से विशेषणात्मक नाम हैं तुम उसे उनके द्वारा पुकारा करो) अत: ख़ुदा की विशेषताओं और उसके विशेषणात्मक नामों के ज्ञान के लिए क़ुरआन करीम का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।''

(अस्माउल हुस्ना पृष्ठ-4)

क़ुरआन पाक अल्लाह तआला की विशेषताओं के वर्णन से भरा पड़ा है। क़ुरआन मजीद के जवाहरात में से कुछ जवाहिर प्रस्तुत करना चाहता हूँ। अल्लाह तआला ही अपनी कृपा से ख़ाकसार को इस का सामर्थ्य प्रदान करे। जो बातें प्रस्तुत करना चाहता हूँ उनका सार यह है :-

१. हमारा ख़ुदा, अल्लाह है।
२. हमारा ख़ुदा, एक ही है।
३. हमारा ख़ुदा, हमारा रब्ब है।
४. हमारा ख़ुदा, हमारा बादशाह है।
५. हमारे ख़ुदा ने सब कुछ पैदा किया। वह हर चीज़ का जानने वाला है। बड़ी ताक़तों वाला है।
६. हमारा ख़ुदा पालनहार है। सबको आजीविका प्रदान करता है उसके हम पर अनगिनत उपकार हैं।
७. हमारा ख़ुदा हमारे हालात को अच्छी प्रकार जानता है। दिल की बातों को भी जानता है।
८. हमारा ख़ुदा दुआओं को स्वीकार करता है। अपने प्रियभक्तों से संवाद भी करता है।

९. हमारा ख़ुदा, सच्चा ख़ुदा है। सच्चाई को विजय देता है। लोगों को सन्मार्ग प्रदान करता है।

१०. हमारा ख़ुदा, बहुत प्यार करने वाला ख़ुदा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वितीय ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरूद्दीन महमूद अहमद साहिब जो मुस्लेह मौऊद भी थे ने एक बहुत प्यारी कविता सरल भाषा में अल्लाह तआला के बारे में लिखी है जो निम्नलिखित शब्दों से शुरू होती है:-

मेरी रात दिन बस यही इक सदा है- कि इस आलम-ए-कौन का इक ख़ुदा है।

(कलाम-ए-महमूद भाग-2 पृ-130)

इस कविता के कुछ दोहे ख़ाकसार ने अपने भाषण के प्रारंभ में सुनाया था। इन्साअल्लाह भाषण के मध्य उनकी कविता के दूसरे दोहे भी प्रस्तुत करूँगा। ''मिस्लत के इस फ़िदाई पे रहमत ख़ुदा करे।''

◉ हमरा ख़ुदा अल्लाह है

अल्लाह हमारे ख़ुदा का ख़ुद का नाम है। सूर: फ़ातिह: में अल्लाह तआला फ़रमाता है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣

अल्हम्दुलिल्लहि, अर्थात अल्लाह वह सत्ता है जिसमें प्रत्येक विशेषता अपनी पूरी चरमोत्कर्ष के साथ पायी जाती है। समस्त प्रशंसायें अल्लाह के लिए हैं। वह समस्त लोकों का रब्ब है समस्त ब्रह्माण्ड का रब्ब है। रब्ब का अर्थ है किसी चीज़ को पैदा करके क्रमिक विकास कर चरमोत्कर्ष को पहुँचाने वाला। अत: अल्लाह तआला समस्त लोकों का पैदा करने वाला और उन्नतियाँ देने वाला है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्लाम फ़रमाते हैं: ''वह समस्त क़ौमों का रब्ब है और समस्त युगों का रब्ब है और समस्त स्थानों का रब्ब है और समस्त देशों का वही रब्ब है। ''(रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-23, पृ 442 पैग़ाम-ए-सुलह)

वह न सिर्फ़ शारीरिक परवरिश करता है बल्कि आध्यात्मिक परवरिश भी करता है और इन्सान की आध्यात्मिक उन्नतियों हेतु अपने अवतारों को भेजता है।

अल्लाह तआला की दूसरी विशेषता जो सूर: फ़तिहा में वर्णन हुई है वह 'रहमान' है अर्थात अत्यन्त कृपा करने वाला और बिना माँगे देने वाला है। सूरज चाँद सितारे हवा पानी इत्यादि सब कुछ उसने हमें बिना माँगे दिए हैं। वह रहमान ख़ुदा ही है जिसने क़ुरआन सिखाया इन्सान को बनाया और उसको वर्णन करने की शक्ति प्रदान की। (अर-रहमान आयत नं 2-4)

अल्लाह तआला रहीम भी है अर्थात बार-बार रहम करने वाला है मेहनत का फल देने वाला है। अल्लाह थोड़ा सा भी ज़ुल्म नहीं करता। अगर किसी की कोई नेकी हो तो बढ़ाता है और अपने पास से भी बहुत बड़ा प्रतिफ़ल देता है। (सूर:निसा आयत न. 41)

अल्लाह तआला 'मालिक यौमिद्दीन' भी है अर्थात सज़ा और प्रतिफल के समय का मालिक है। अच्छे काम करने पर वह इनाम देता है और बुरे काम करने पर वह सज़ा देता है। वह हर बुरे काम की सज़ा देने पर विवश नहीं है क्योंकि वह मालिक है। उसके इख़्तियार में है कि चाहे तो छोड़ दे और चाहे तो पकड़े जैसे उसको मुनासिब मालूम हो। सब के मरने के बाद क़यामत के लिए पूर्णत: सज़ा और प्रतिफल का दिन होगा। लेकिन इस दुनिया में भी सज़ा और प्रतिफल का सिलसिला एक हद तक चलता है।

ये चार विशेषतायें जो सूर: फ़ातिहा में बयान हुई हैं। ये अल्लाह तआला की चार मूल विशेषतायें हैं और दूसरी विशेषतायें इनकी व्याख्या करती हैं।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'आयतुल कुर्सी' को क़ुरआन मजीद की महान आयत बताया है।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल हुरूफ़ वल-किरात)

आयतुल कुर्सी में अल्लाह तआला की महान विशेषतायें इस तरह बयान हुई हैं:-

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۚ

अर्थात अल्लाह वह सत्ता है जिसके अतिरिक्त उपासना का कोई दूसरा पात्र नहीं। वह सदैव जीवित रहने वाला है। वह अपने आप में स्वयं क़ायम और सबको क़ायम रखने वाला है।

لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوۡمٌ ؕ

न उसे ऊँघ आती है और न नींद।

لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है।

مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ

कौन है जो उसकी आज्ञा के बिना उसके समक्ष सिफ़ारिश करे।

یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ ۚ

जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है वह सब कुछ जानता है अल्लाह तआला उसे भी जानता है जो आगे होना है और उसे भी जानता है जो लोग कर चुके हैं।

وَلَا یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ

और वह उसकी इच्छा के अतिरिक्त उसके ज्ञान के किसी भाग को भी नहीं पा सकते।

وَسِعَ كُرۡسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ ۚ

कुर्सी ज्ञान को भी कहते हैं और शासन को भी। अल्ला का ज्ञान और उसका शासन आसमानों पर भी और ज़मीन पर भी हावी है।

وَلَا یَـُٔوۡدُهٗ حِفۡظُهُمَا ۚ

और उनकी हिफ़ाज़त उसको थकाती नहीं।

وَهُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ

और वह बड़ी शान रखने वाला और बड़ी महानता वाला है।

(सूर: अल-बक़र: आयत न: 256)

इसमें 'अल-अलीयु' शब्द में अल्लाह तआला की महानता और बुलन्दी की ओर इशारा है और 'अल अज़ीम' में अल्लाह तआला की शक्तियों के

विस्तार और आधिक्यता की ओर इशारा है।

(तफ़्सीर कबीर लेखक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि. जिल्द-2 पृ 584)

अल्लाह तआला की बुलन्दी और महानता को प्रकट करने के लिए क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला के लिए अर्श का शब्द भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणत: क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ (المؤمن آیت ۱۶)

अर्थात अल्लाह तआला ऊँचे दर्जों वाला है अर्श का मालिक है। अर्श कोई भौतिक या रचित चीज़ नहीं है जिस पर ख़ुदा बैठा हुआ है। क़ुरआन मजीद हमें बताता है कि अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन का और तमाम् चीज़ों का पैदा करने वाला है लेकिन यह कहीं वर्णन नहीं है कि अर्श कोई भौतिक चीज़ है जिसे ख़ुदा ने पैदा किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

क़ुरआन शरीफ़ में अर्श का शब्द जहाँ-जहाँ प्रयोग हुआ है। उससे तात्पर्य ख़ुदा की महानता, प्रभुत्व और बड़ाई है। इसी कारण से उसे स्रजित चीज़ों में दाख़िल नहीं किया।''(नसीम दावत, रूहानी जिल्द-19 पृ-455)

एक दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ○ (النمل آیت ۲۷)

अर्थात अल्लाह वह है जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं वह एक बड़े सिंहासन का मालिक है।

नोट:- हमारे चौथे इमाम हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ रहमहुल्लहु तआला 12-2-1999 ई. 19-2-1999 और 26-2-1999 ई. के तीनों ख़ुत्बात-ए-जुमा में आयतुल कुर्सी की रूह पर्वर तफ़्सीर बयान की है।

⊙ हमारा ख़ुदा एक ही है

अल्लाह एक ही है। अपनी सत्ताा में भी और अपनी विशेषताओं में भी।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۲﴾

अर्थात कह कि वह अल्लाह एक ही है।

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۳﴾

वह निस्पृह है और किसी का मुहताज नहीं है।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۴﴾

सब उसके मुहताज हैं और वह किसी का मुहताज नहीं। न उसने किसी को जना है और न वह जना गया है।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ﴿۵﴾

उसका कोई समकक्ष नहीं। अर्थात उसके बराबर का मर्तबा रखने वाला कोई भी नहीं। उसकी विशेषताओं में उसका कोई भी साझीदार नहीं।

(सूर: इख्लास आयत नं. 2-5)

वह है एक उसका नहीं कोई हमसर
वह मालिक है सबका वह हाकिम है सब पर
न है बाप उसका न है कोई बेटा
हमेशा से और हमेशा रहेगा
नहीं उसको हाजत कोई बीवियों की
ज़रूरत नहीं उसको कुछ साथियों की

(कलाम-ए-महमूद)

ख़ुदा एक ही उसका प्रमाण क़ुरआन शरीफ़ ने यह दिया है कि:-

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ (الانبیاء آیت ۲۳)

अगर आसमान और ज़मीन में अल्लाह के सिवा कोई दूसरा उपास्य होता तो दोनों अर्थात आसमान और ज़मीन प्रबन्ध की दृष्टि से बिगड़ जाते। अगर दो ख़ुदा होते तो समानान्तर स्कीमें दुनिया में चलती और उसके परिणाम स्वरूप दुनिया का एक हिस्सा एक ओर जा रहा होता और दूसरा हिस्सा किसी दूसरी ओर जा रहा होता। मगर ऐसा नहीं है। विज्ञान हमें बताती है कि सारी

दुनिया में सारी सृष्टि में हमें एक ही कानून चलता हुआ नज़र आ रहा है।

क़ुरआन मजीद में यह बात कि सिर्फ़ अल्लाह तआला ही हमारा उपास्य है अर्थात इबादत के योग्य है बार-बार बहुत ज़ोर देकर प्रस्तुत की गयी है। जिसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:-

सूरः आले-इमरान में फ़रमाया है:-

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ
قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۸﴾

(आल इमरान आयत १९)

अर्थात अल्लाह न्याय की दृष्टि से यह गवाही देता है कि वास्तविकता यही है कि उसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपास्य नहीं और फ़रिश्ते भी और ज्ञान वाले भी यही गवाही देते हैं कि उसके अतिरिक्त इबादत (उपासना) का कोई पात्र नहीं। वह पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील है।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۝ (طٰہٰ آیت ۹)

अर्थात अल्लाह वह सत्ता है जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। उसके बहुत से विशेषणात्मक नाम हैं।

قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ (ص آیت ٦٦)

अर्थात तू उनसे कह दे कि मैं तो केवल एक सतर्क करने वाला हूँ। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वह अकेला और पूर्ण प्रभुत्व रखने वाला है।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ (تغابن آیت ۱۳)

अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए।

⊙ हमारा ख़ुदा हमारा रब्ब है

हमारा ख़ुदा हमारा रब्ब है। हमारा पैदा करने वाला हमारी परवरिश करने वाला, हमारा पालने वाला, हमें उन्नति प्रदान करने वाला है। सूरः अल-फ़तिहा में सबसे पहली विशेषता जो अल्लाह तआला की बयान हुई

है वह 'रब्ब' है। क़ुरआन करीम की सबसे पहली आयतें जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित हुईं उनमें भी अल्लाह तआला के रब्ब होने की विशेषता का वर्णन है वे आयतें निम्नलिखित हैं:-

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ
الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾ (العلق:۲-۶)

अपने रब्ब का नाम लेकर पढ़ जिसने पैदा किया। जिसने इन्सान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया। पढ़ और तेरा रब्ब बहुत करीम है बड़ी इज़्ज़त वाला है। वह रब्ब जिसने क़लम के साथ ज्ञान सिखाया और भविष्य में भी सिखाएगा। उसने इन्सान को वह कुछ सिखाया है जो वह पहले नहीं जानता था।

इन आयतों में बहुत ही प्यारे अन्दाज़ में बताया गया है कि हमारा ख़ुदा जो हमारा रब्ब है उसने हमें और हर चीज़ को पैदा किया है और वही ज्ञान देता है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने रब्ब का जो समस्त लोकों का रब्ब है बहुत ही प्यारे शब्दों में इस तरह वर्णन करते हैं:-

الَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ یَهْدِیْنِ ۝

उसने मुझे पैदा किया है और वही मुझे हिदायत देता है।

وَالَّذِیْ هُوَ یُطْعِمُنِیْ وَیَسْقِیْنِ

और वही मुझे खिलाता है और मुझे पिलाता है।

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ ۝

और जब मैं बीमार होता हूँ तो वह मुझे स्वास्थ्य प्रदान करता है।

وَالَّذِیْ یُمِیْتُنِیْ ثُمَّ یُحْیِیْنِ ۝

और वही है जो मुझे मारेगा और फिर ज़िन्दा करेगा।

अल्लाह तआला के प्रेम में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने एक शैर में फ़रमाते हैं कि

क्या इससे बढ़कर राहत है जाँ निकले तेरे हाथों में
तू जान का लेने वाला बन मुझ को तो कोई इन्कार नहीं

(कलाम-ए-महमूद भाग-2 पृ 161)

मौत के साथ हमारा ख़ात्मा नहीं होगा बल्कि हमारा ख़ुदा हमें एक नई ज़िन्दगी प्रदान करेगा फिर क़यामत के दिन पाप और पुण्य का प्रतिफल दिया जायेगा। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

وَالَّذِیْٓ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓـَٔتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِ ؕ

और उस सत्ता के ऊपर मुझे पूरा भरोसा है कि जज़ा-सज़ा (प्रतिफल) के समय वह मेरी ग़ल्तियों को क्षमा कर देगा।

(अश शुअरा आयत न. 79 से 83)

क़ुरआन मजीद में रब्ब की विशेषता का बार-बार वर्णन हुआ है। कई जगह रब्बी (मेरा रब्ब) रब्बना (हमारा रब्ब) रब्बका (तेरा रब्ब) रब्बुकुम (तुम्हारा रब्ब) इत्यादि के मुहब्बत भरे शब्द आये हैं।

सूरः रहमान में लिखा है कि

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِی الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ○ (الرحمن آیت نمبر ۷۹)

तेरे रब्ब का नाम बड़ी बरकत वाला है जो प्रबल प्रतापी और अति सम्माननीय है।

सूरः वाक़िअः में लिखा है

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِیْمِ ○ (الواقعہ آیت نمبر ۷۵)

अपने महान रब्ब की पवित्रता का वर्णन कर। सूरः अल आला में लिखा है:-

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ○ (سورۃ الاعلیٰ آیت نمبر ۲)

अपने महान रब्ब के नाम की पवित्रता बयान कर। जब हम नमाज़ पढ़ते हैं तो रुकूअ में कहते हैं ''सुब्हान रब्बियल अज़ीम'' अर्थात पवित्र है मेरा रब्ब जो महान है और सज्दा की हालत में कहते हैं ''सुब्हान रब्बियल आला'' अर्थात पवित्र है मेरा रब्ब जो महान है अर्थात बड़ी शान वाला है। इस तरह बार-बार मेरा रब्ब मेरा रब्ब कई बार नमाज़ में कहकर हम अपने प्यारे ख़ुदा के साथ अपनी मुहब्बत का इज़हार करते हैं और अल-अज़ीम और अल-आला के शब्दों से अल्लाह तआला की महानता का इक़रार करते हैं।

⦿ (4) हमारा ख़ुदा हमारा बादशाह है

हमारा ख़ुदा हमारा बादशाह भी है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ (الحشر آیت ۲۴)

हमारा ख़ुदा ऐसा बादशाह है जिस पर कोई ऐब का धब्बा नहीं। वह पवित्र है वह सलामती देने वाला है। अमन देने वाला है। संरक्षक और मुहाफ़िज़ है। पूर्ण प्रभुत्व वाला है। काबू में रखने वाला है। बड़ी शान वाला है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक शैर में फ़रमाते हैं:-

''क़ादिर है वह बारगाह टूटा काम बनावे
बना बनाया तोड़ दे कोई उसका भेद न पावे''

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ रहमहुल्लाहु ने अपने तर्जुमतुल क़ुरआन क्लास में बताया था कि अल्लाह तआला कि विशेषता ''अल-जब्बार'' में जोड़ने और तोड़ने के दोनों अर्थ पाये जाते हैं।

एक दूसरी जगह अल्लाह तआला की बादशाहत का वर्णन इस तरह किया गया है:-

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ

अर्थात तू कह हे अल्लाह ! तू शासन का मालिक है तू जिसे चाहे शासन देता है और जिससे चाहे शासन ले लेता है।

وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ

जिसे चाहे प्रभुत्व प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है।

بِيَدِكَ الْخَيْرُ

सब भलाई तेरे ही हाथ में है

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

और तू नि:सन्देह हर एक चीज़ पर समर्थ है।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ

तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है।

وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ

और तू बे जान से जानदार निकालता है और जानदार से बेजान निकालता है।

وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

और जिसे चाहे वे हिसाब देता है (आले इमरान आयत न. 27)

सूर:यासीन में फ़माया:-

فَسُبْحٰنَ الَّذِیْ بِیَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ۝ (یٰس ۸۳)

पवित्र है वह सत्ता जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और उसकी ओर ही तुम लौटाए जाओगे।

सूर हदीद में फ़रमाया:-

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ۝ (الحدید آیت ۵)

उसकी बादशाहत आसमानों और ज़मीन में है और उसकी ओर समस्त विषय निर्णय के लिए लौटाए जाते हैं।

इस आयत की व्याख्या में हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ रहमहुल्लाहु तआला ने 22 जनवरी सन् 1998 ई. के ख़ुत्बा जुमा में फ़रमाया था

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ

यह ऐलान-ए-आम है कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है। कोई इस बादशाही में उसका साझीदार नहीं। इस वास्तविकता का दिल में बैठ जाना यही तौहीद (एकेश्वरवाद) है।

وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ

न सिर्फ़ यह कि बादशाही, बल्कि तमाम विषय और तमाम् अहम बातें उसकी तरफ़ लौटाई जायेंगी। उससे भागने की जगह नहीं। ख़ुदा तआला की बादशाही कोई दुनिया की बादशाही नहीं जिससे आप भागकर कहीं मुँह छिपा सकें। दुनिया में भी कोई भागने की जगह नहीं। आसमानों में भी कोई भागने की जगह नहीं और अगर होती भी तो अन्तत: उसी की ओर लौटना है। अत: दुनिया में अल्लाह तआला की तक़दीर ज़ाहिर होने में कई बार देर

भी हो जाती है। लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने संबोधित करके विश्वास दिलाया था कि देख तेरे विरोधियों की पकड़ अगर यहाँ न भी होगी तो तू जानता है कि अन्ततः अवश्य होगी। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित करते हुए यह फ़रमाना वस्तुतः एक गहरी हिकमत (युक्ति) हम सबके लिए रखता है। आँहज़त सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि इस पर पूरी तसल्ली हो गयी थी और कण मात्र भी बेचैनी शेष न रही क्योंकि आप आख़िरत (क़यामत) पर विश्वास रखते थे। आपके लिए कोई पकड़ यहाँ हो या वहाँ हो केवल एक रस्मी अन्तर था अपितु सच बात यही है कि आपके निकट तो इस दुनिया और उस दुनिया में अन्तर ही कोई नहीं था और जब विश्वास हो तो फिर दुश्मनों का अहंकार और उनके परिहास सब व्यर्थ हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि

وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ

अन्ततः सब बातों ने उसकी ओर ही लौटना है। इसमें घबराहट की क्या ज़रूरत है। यह पूर्णतः भरोसा है जो मैं जमाअत से चाहता हूँ और हर संभव कोशिश करता हूँ कि मेरा दम इस विश्वास पर निकले। कण मात्र भी ख़ुदा से किसी प्रकार का शिकवा दिल में नहीं पैदा होना चाहिए चाहे बीमारियाँ हों, मुसीबतें हों, दुशमन के अहंकार हों या दुश्मन के अतिरिक्त ज़िन्दगी के मसाइल हों। अगर यह आपका धर्म है जो इस आयत में बयान हुआ तो फिर आप चैन की साँस लेंगे और मरते समय भी आपको एक ऐसा दिली चैन प्राप्त होगा जो किसी दूसरे को नसीब नहीं हो सकता।''

(ख़ुत्बा जुमा 2 जनवरी सन् 1998 ई)

⊙ हमारा ख़ुदा सृष्टिकर्ता है, हर चीज़ का पैदा करने वाला है

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ط (الحشر آیت ۲۵)

अर्थात सच यही है कि अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और हर

चीज़ का आविष्कारक भी है और हर चीज़ को उसके मुनासिब हाल आकृति देने वाला है उसकी बहुत सी अच्छी विशेषतायें हैं।

(तर्जुमा अज़ तफ़सीर साग़ीर)

सूरः अल अनाम में फ़रमाया :-

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ
وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ○ (الانعام آیت ۱۰۲)

वह आसमानों और ज़मीन को बिना नमूना पैदा करने वाला है। उसका बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई धर्मपत्नी नहीं और उसने तो हर एक चीज़ को पैदा किया है और वह हर एक बात को जानता है।

हम एक बड़े ब्रह्माण्ड में, एक बड़ी दुनिया में रहते हैं। हमारी सारी ज़मीन ब्रह्माण्ड के सामने कोई हैसियत नहीं रखती। रात को हम आसमान पर नज़र डालें तो बहुत से सितारे दिखाई देते हैं और ये सितारे (कुछ सितारों के अतिरिक्त) दर असल सूरज हैं जो बहुत दूर होने के कारण छोटे नज़र आते हैं। अगर हमारा सूरज भी इतनी दूर होता तो वह भी एक सितारे की तरह दिखाई देता। बहुत से सितारे इतनी दूर हैं कि उनको देखने के लिए बड़े-बड़े दूरदर्शक यंत्रों की आवश्यकता है। हमारी आकाशगंगा जिसे अंग्रेजी में Galaxy कहते हैं इसमें अरबों की संख्या में सितारे हैं जो व्यवस्था के अन्तर्गत घूमते हैं फिर अरबों की संख्या में Galaxies (ग्लैक्सियाँ) हैं। और जो कुछ हम नहीं जानते, वह जो कुछ हम नहीं जानते उससे बहुत ज़्यादा है। हर चीज़ को अल्लाह तआला ने अपनी ताक़त से पैदा किया है और हर चीज़ के बारे में उसको पूर्णज्ञान है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ (الحشر آیت ۲۳)

अर्थात अल्लाह तआला प्रत्यक्ष एवं परोक्ष का ज्ञाता है।

हमारा ख़ुदा बड़ी क़ुदरतों वाला खुदा है सूरः यासीन में लिखा है कि

اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ (سورہ یٰس آیت ۸۳)

अर्थात अल्लाह तआला का मामला यूँ है कि जब कभी वह यह इरादा

करता है कि अमुक चीज़ हो जाय वह उसके बारे में कह देता है कि इस तरह हो जा और वह उस तरह हो जाती है। ज़रा सोचो तो सही सिर्फ़ अल्लाह तआला के इरादे से और उसके इशारे से यह सारी दुनिया यह सारी सृष्टि बन गयी। एक दूसरी जगह अल्लाह तआला की क़ुदरत का इस तरह वर्णन है।

اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا (الرعد آیت ۳)

अर्थात अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना खंभों के ऊँचा किया है। सूर: अल-ग़ासिय: में फ़रमाया:-

اَفَلَا یَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَیْفَ خُلِقَتْ ﴿۱۸﴾ وَاِلَى السَّمَآءِ كَیْفَ رُفِعَتْ ﴿۱۹﴾ وَاِلَى
الْجِبَالِ كَیْفَ نُصِبَتْ ﴿۲۰﴾ وَاِلَى الْاَرْضِ كَیْفَ سُطِحَتْ ﴿۲۱﴾ (الغاشیہ آیات ۱۸،۲۱)

अर्थात क्या वे ऊँट की ओर नहीं देखते कि वह कैसे पैदा किया गया है। और आसमान की ओर नहीं देखते कि किस तरह ऊँचा किया गया है और पहाड़ों की ओर नहीं देखते कि किस तरह गाड़े हुए हैं और धरती को नहीं देखते कि कैसे फैलाई गई है।

हर इक चीज़ पर उस को क़ुदरत है हासिल
हर इक काम की उस को ताक़त है हासिल
पहाड़ों को उसने ही ऊँचा किया है
समन्दर का उसने ही पानी दिया है
ये दरिया जो चारों तरफ बह रहे हैं
उसी ने तो क़ुदरत से पैदा किए हैं

(कलाम-ए-महमूद)

अल्लाह की सृष्टि की पैदाइश में कोई कमी या दोष नहीं होता। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرُ

बहुत बरकत वाला है वह ख़ुदा जिसके क़ब्ज़े में बादशाहत है और वह हर एक इरादा के पूरा करने पर समर्थ है।

الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْغَفُوْرُ

उसने मृत्यु और जीवन को इसलिए बनाया है कि वह तुम को आज़माये कि तुम में से कौन ज़्यादा अच्छा कर्म करने वाला है और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला और बहुत क्षमा करने वाला है।

الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا مَا تَرٰی فِیْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ
مِنْ تَفٰوُتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰی مِنْ فُطُوْرٍ

वही है जिसने सात आसमान दर्जा बदर्जा बनाये हैं और तू रहमान ख़ुदा की सृष्टि की पैदाइश में कोई कमी नहीं पा सकता और तू अपनी आँख को अच्छी तरह फेरकर इधर उधर देख ले, क्या तुझे ख़ुदा की सृष्टि में किसी जगह भी कोई कमी नज़र आती है ?

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا
وَّهُوَ حَسِيْرٌ (سورة الملک آیت ۲-۵)

फिर बार-बार नज़र को चक्कर दे वह तेरी ओर नाकाम हो कर लौट आयेगी और वह थकी हुई होगी फिर भी कोई कमी नज़र नहीं आयेगी।

सूर: मोमिनून में फ़रमाया:-

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿۱۴﴾ (المؤمنون آیت ۱۰)

ख़ुदा सबसे अच्छा पैदा करने वाला है।

⊙ हमारा ख़ुदा अल-रज़्ज़ाक़ (अन्नदाता) है

हमारा ख़ुदा अल-रज़्ज़ाक़ (अन्नदाता) भी है अर्थात वह जीविका देने वाला है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ (سورة الذّٰریٰت آیت ۰۹)

अर्थात नि:सन्देह अल्लाह ही जीविका देने वाला है और बड़ी ज़बरदस्त ताक़त वाला है।

وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ (سورة الانعام آیت ۱۰)

अर्थात वह सबको खिलाता है और उसे नहीं खिलाया जाता। हमारे

हिन्दुस्तान की जनसंख्या लगभग 90 करोड़ से अधिक है। सारी ज़मीन की आबादी इससे पाँच गुना अधिक है अल्लाह ही सबको खिला रहा है। इन्सानों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के जानवर और पक्षी और मछलियाँ और दूसरे जीव धारी धरती पर रहते हैं हर एक को अलग तरह की जीविका की ज़रूरत है। सबके लिए अल्लाह तआला ही प्रबन्ध कर रहा है। क़ुरआन मजीद फ़रमाता है:-

وَمَامِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا (سورہ ھود آیت ۷)

धरती में ऐसा कोई भी जीवधारी नहीं है जिसकी जीविका अल्लाह के ज़िम्में न हो।

समन्दर की मछली हवा के परिन्दे।
घरेलू चरिन्दे वनों के दरिन्दे।
सभी को वही रिज़्क़ पहुँचा रहा है।
हर एक अपने मतलब की शै खा रहा है।
हर इक शै को रोज़ी वह देता है हरदम
ख़ज़ाने कभी उसके होते नहीं कम।
वह ज़िन्दा है और ज़िन्दगी बख़्शता है
वह क़ायम है हर एक का आसरा है।

(कलाम-ए-महमूद)

जीविका ख़ुद बख़ुद नहीं आती बल्कि ख़ुदा की इच्छा से आती है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ (الملک آیت ۲۲)

अर्थात वह हस्ती जो तुम्हें जीविका देती है अगर अपनी देने वाली जीविका को रोक ले तो क्या कोई है जो तुम्हें जीविका दे ? अगर ख़ुदा तआला अपनी जीविका को रोक ले तो कोई नहीं है जो हमें जीविका दे। वह लोगों की मेहनत और लोगों के हालात जानता है और अपनी हिक़मत के अनुसार किसी को ज़्यादा देता है और किसी को कम। क़ुरआन मजीद में अल्लाह

तआला फ़रमाता है:-

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ○ (بنی اسرآئیل آیت ۳۱)

अर्थात तेरा रब्ब जिसके लिए चाहता है जीविका को बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। वह नि:सन्देह अपने बन्दों के हालात को जानने वाला और देखने वाला है। क़ुरआन मजीद फ़रमाता है:-

اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ○ (سورۃ ال عمران آیت ۳۸)

अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब देता है। जो मुत्तक़ी (परहेज़गार) होता है और ख़ुदा से डरता है उसको अल्लाह तआला ऐसे तौर पर जीविका देता है जो कि उसके वहमोगुमान में भी नहीं होता।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ
وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ (الطلاق آیات ۴ ، ۳)

अर्थात जो अल्लाह तआला का तक़्वा धारण करेगा अल्लाह तआला उसके लिए कोई न कोई रास्ता निकालेगा और वहाँ से जीविका प्रदान करेगा जहाँ से उसे जीविका आने का गुमान भी नहीं होगा। जो अल्लाह तआला पर भरोसा करता है अल्लाह उसके लिए काफ़ी है।

अल्लाह तआला हमारी अनन्त ज़रूरतों को पूरा करता है उसके हम पर बहुत से उपकार हैं। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ
فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ (الجاثیہ آیت ۱۴ ۱۳)

अल्लाह ही है जिसने समुद्र को तुम्हारी सेवा में लगाया हुआ है ताकि उसके आदेश से उसमें नावें चलें और उसके द्वारा उसके फ़ज़्ल को तलाश

करो ताकि तुम शुक्र अदा करो। और जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में है सब का सब उसने तुम्हारी सेवा पर लगाया हुआ है। इसमें ग़ौर फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए बड़े निशान हैं।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿۵۳﴾ (النحل آیت ۵۴)

जो नेअमत भी तुम्हारे पास है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें कोई तंगी और तकलीफ़ पहुँचती है तो उस समय भी तुम उसके समक्ष फ़रियाद करते हो।

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ (النحل آیت ۱۹)

और अगर तुम अल्लाह के एहसान गिनने लगो तो उनको गिन नहीं सकोगे नि:सन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

⊙ हमारा ख़ुदा हमारे हालात को अच्छी तरह जानता है

हमारा ख़ुदा हमारे हालात को अच्छी तरह जानता है। सूर: तग़ाबन में अल्लाह तआला की पवित्र विशेषतायें इस तरह बयान हुई हैं

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ (التغابن آیت ۲)

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है अल्लाह की स्तुति कर रहा है। बादशाहत भी उसी की है और प्रशंसा भी उसी की है और वह हर चीज़ पर समर्थ है।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○ (التغابن آیت ۳)

अर्थात वही है जिसने तुमको पैदा किया। अत: तुम में से कोई काफ़िर बन जाता है और कोई मोमिन बन जाता है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को

देख रहा है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ وَصَوَّرَكُمۡ فَاَحۡسَنَ
صُوَرَكُمۡ ۚ وَاِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ ○ (سورۃ التغابن آیت ۴)

आसमानों और ज़मीन को उसने एक विशेष उद्देश्य से मातहत पैदा किया है और उसने तुम्हारी सूरतें बनाई हैं और तुम्हारी सूरतों को बहुत अच्छा बनाया है और उसी की ओर तुमने लौट कर जाना है।

يَعۡلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَيَعۡلَمُ مَا تُسِرُّوۡنَ وَمَا تُعۡلِنُوۡنَ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ○ (سورہ التغابن آیت ۵)

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उसे वह जानता है और उस बात को भी जानता है जिसे तुम छुपाते हो या ज़ाहिर करते हो और अल्लाह दिल की बातों को भी जानता है।

सूर: क़ाफ़ में फ़रमाया

وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ وَنَعۡلَمُ مَا تُوَسۡوِسُ بِهٖ نَفۡسُهٗ ۚ وَنَحۡنُ
اَقۡرَبُ اِلَيۡهِ مِنۡ حَبۡلِ الۡوَرِيۡدِ ○ (قٓ آیت ۱۷)

हमने इन्सान को पैदा किया है ओर जो भ्रम उसका मन पैदा करता है उसे भी अच्छी तरह जानते हैं और हम उससे उसकी रगे-जान (प्राणस्नायु) से भी अधिक निकट हैं। अल्लाह तआला हमारी प्राणस्नायु से भी अधिक हमारे निकट है। हमारे दिल में जो कुछ गुज़ारता है अल्लाह उसे जानता है। किसी काम को करते समय हमारी क्या नीयत होती है, क्या मनोभाव होता है क्या विचार आते हैं अल्लाह तआला सब कुछ जानता है। कोई भी चीज़ उसकी नज़र से छुपी हुई नहीं है।

कोई शै नज़र से नहीं उसके मख़्फ़ी बड़ी से बड़ी हो कि छोटी से छोटी।

दिलों की छुपी बात भी जानता है
बदों और नेकों को पहचानता है।

(कलाम-ए-महमूद)

◉ हमारा ख़ुदा दुआओं को स्वीकार करने वाला ख़ुदा है और वह बोलता भी है

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ
فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَلْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ ○ (البقرہ آیت ۱۸۷)

हे रसूल ! जब मेरे बन्दे तुझ से मेरे बारे में पूछें तो तू उत्तर दे कि मैं उनके पास ही हूँ। जब दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उसकी दुआ स्वीकार करता हूँ। इसलिए चाहिए कि वे दुआ करने वाले भी मेरे आदेश को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लायें ताकि वे हिदायत पायें। अत: क़ुरआन मजीद फ़रमाता है:-

اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَیَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَیَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ
الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۳﴾ (النمل آیت ۶۳)

कि बताओ तो सही कि कौन बेकस (असहाय) की दुआ सुनता है जब वह उससे (अर्थात ख़ुदा से) दुआ करता है और उसकी तकलीफ़ को दूर कर देता है और वह तुम दुआ करने वाले लोगों को एक दिन ज़मीन का उत्तराधिकारी बना देगा। क्या उस सर्वशक्तिमान अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य है ? तुम बिल्कुल नसीहत नहीं पकड़ते।

क़ुरआन शरीफ़ में दुआ के क़ुबूल होने की कई महान घटनाओं का वर्णन है। मौजूदा ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और उनके ख़ुल्फ़ा-ए-किराम के कई क़ुबूलियत-ए-दुआ के ईमानवर्धक नमूने हमको मिलते हैं।

अल्लाह तआला न सिर्फ दुआओं को सुनता है बल्कि वह जवाब भी देता है। अपने प्यारों से बातें भी करता है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह के अपने भक्तों से संवाद करने का वर्णन मिलता है जैसा कि क़ुरआन मजीद फ़रमाता है:-

وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰی تَكْلِیْمًا ﴿۱۶۵﴾ (النساء آیت ۱۶۵)

कि अल्लाह तआला ने मूसा से ख़ूब अच्छी तरह संवाद किया था। मौजूदा ज़माने में लोगों में यह ग़लत फ़हमी पैदा हो गयी थी कि अल्लाह तआला के संवाद करने का सिलसिला अब बन्द हो चुका है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस गलतफ़हमी को दूर किया और फ़रमाया कि नि:सन्देह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी शरीअत (धर्म विधान) लाने वाले नबी हैं और अब कोई नयी शरीअत (धर्मविधान) नहीं आयेगी। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि अल्लाह तआला से इल्हाम (ईशवाणी) पाने का सिलसिला बन्द हो चुका है ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

''हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो अब भी ज़िन्दा है जैसा कि पहले ज़िन्दा था और अब भी वह बोलता है जैसा कि वह पहले बोलता था और अब भी वह सुनता है जैसा कि पहले सुनता था। यह विचार ग़लत है कि इस ज़माने में वह सुनता तो है मगर बोलता नहीं। बल्कि वह सुनता है और बोलता भी है। उसकी सारी विशेषतायें आदि और अनादि हैं कोई विशेषता भी बेकार नहीं और न कभी होगी।''

(अल-वसीयत, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 20 पृ 309)

मौजूदा ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बहुत अधिक हमकलाम हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपना अनुभव यूँ बयान करते हैं:-

'' हमारा ज़िन्दा हय्यु क़य्यूम (सदैव जीवित) ख़ुदा हमसे इन्सान की तरह बातें करता है। हम एक बात पूछते हैं और दुआ करते हैं तो वह क़ुदरत के भरे हुए शब्दों के साथ जवाब देता है। अगर यह सिलसिला हज़ार मर्तबा तक भी जारी रहे तब भी वह जवाब देने से मुँह नहीं फेरता। वह अपनी बातों में अजीब दर अजीब ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें ज़ाहिर करता है और खारिक़ आदत (चमत्कारिक) क़ुदरतों के नज़ारे दिखलाता है। यहाँ तक कि वह विश्वास करा देता है कि वह वही है जिसको ख़ुदा कहना चाहिए है।

दुआयें क़ुबूल करता है और क़ुबूल करने की सूचना देता है। वह बड़ी-बड़ी मुश्किलें हल करता है और जो मुर्दों की तरह बीमार हो उनको भी अत्यधिक दुआ करने से ज़िन्दा कर देता है। और ये सब इरादे अपने समय से पूर्व अपनी वाणी से बतला देता है।

ख़ुदा वही ख़ुदा है जो हमारा ख़ुदा है वह अपनी बातों से जो भविष्य की घटनाओं पर आधारित होती हैं हम पर साबित करता है कि ज़मीन और आसमान का वही ख़ुदा है।

(नसीम दावत, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-19 पृष्ठ 448)

अपनी काव्य रचना में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:-

वह ख़ुदा अब भी बनाता है जिसे चाहे कलीम
अब भी उससे बोलता है जिससे वह करता है प्यार

⊙ हमारा ख़ुदा सच्चा ख़ुदा है

अल्लाह तआला का एक नाम 'अल-हक़' भी है अर्थात वह सच्चाई और सदाक़त का मुख्य स्रोत है। वह सत्य की शिक्षा देता है और सत्य को विजयी करता है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ○ (بنی اسرائیل آیت ۸۲)

और सब लोगों से कह दे कि अब सच आ गया है और झूठ भाग गया है और झूठ तो है ही भाग जाने वाला।

एक नबी जब दुनिया में आता है तो वह अल्लाह तआला के आदेश से लोगों को ख़ुदा की ओर बुलाता है और उनको सच्ची बातों की शिक्षा देता है। वह साधारणत: कमज़ोर और असहाय होता है और उसके विरोधी ताक़तवर होते हैं। लोग उसकी मुख़ालिफ़त करते हैं और उसके मिशन को नाकाम करने की पूरी कोशिश करते हैं। लेकिन अल्लाह तआला अपने रसूल (पैग़म्बर) की सहायता करता है अल्लाह तआला के नबी को उसके मुख़ालिफ़ों पर विजय प्राप्त होती है। क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि:-

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ○ (المجادلہ آیت ۲۲)

अल्लाह ने यह निर्णय कर रखा है कि मैं और मेरे रसूल (पैग़म्बर) ही विजय होंगे। अल्लाह नि:सन्देह ताक़तवर और पूर्ण प्रभुत्व वाला है।

समस्त रसूलों की ज़िन्दगी इस बात पर गवाह है कि सत्य विजयी होता है और झूठ की हार होती है। हमारे रसूल पाक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पवित्र जीवन इस वास्तविकता को सबसे ज़्यादा स्पष्ट तौर पर प्रस्तुत करता है। उन्होंने ऐलान किया कि मैं ख़ुदा का रसूल हूँ जब आप ने एक ख़ुदा पर ईमान लाने और शिर्क (मूर्तिपूजा) को छोड़ने की शिक्षा दी तो आपकी मक्का में अत्यन्त मुख़ालिफ़त हुई। यहाँ तक कि अल्लाह तआला के आदेश पर आपको अपने वतन मक्का को छोड़ कर मदीना हिजरत करनी पड़ी। सोचो तो सही कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सिर्फ एक साथी के साथ रात के अन्धेरे में अपने प्यारे वतन को छोड़ना पड़ा था। आपने सोर नामक ग़ुफ़ा में पनाह ली थी। दुश्मन ग़ुफ़ा तक पहुँच जाता है लेकिन उसको ग़ुफ़ा में घुसने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथी हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को सांत्वना देते हैं कि:-

لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا (التوبہ آیت ۴۰)

ग़म न कर अल्लाह हमारे साथ है। इसके बाद कुछ साल ही गुज़रते है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस हज़ार सहाबा (सहचरों) के साथ विजयपूर्ण हैसियत से मक्का में दाख़िल होते हैं और अपने दुश्मनों को क्षमा कर देते हैं और अल्लाह तआला की यह बात बड़ी शान के साथ पूरी होती है कि

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا (الاسراء ۸۲)

कह कि अब सत्य आ गया है और असत्य भाग गया है और असत्य तो है ही भाग जाने वाला।

اللھم صلی علیٰ محمد وعلیٰ اٰل محمد وبارك وسلم انك حمید مجید

मौजूदा ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही की उम्मत से उल्लाह तआला ने उनके एक जाँनिसार सेवक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम को दुनिया के सुधार के लिए भेजा। आपने अल्लाह तआला से ज्ञान पाकर यह सच्ची बात लोगों को बताई कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गये हैं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पुन: दुनिया में आने की पेशगोई आप ही के द्वारा पूरी हो गयी। आपकी भी बहुत अधिक मुख़ालिफ़त हुई। मौलवियों ने आपके ख़िलाफ़ ज़ोर लगाने में कोई कसर न छोड़ी। जन साधारण ने भी मुख़ालिफ़त की। मुसलमान, ईसाई, हिन्दू इत्यादि सब आपकी मुख़ालिफ़त में एक हो गये। लेकिन अल्लाह तआला ने आपको तसल्ली दी कि वह आपके साथ है तथा आप को ख़ुदा तआला से इल्हाम (ईशवाणी) हुआ **''मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा''** अत: ऐसा ही हुआ। अब ख़ुदा तआला की कृपा से अहमदिया मुस्लिम जमाअत जिसकी आपने अल्लाह के आदेश पर सन् 1889 ई. में बुनियाद रखी थी डेढ़ सौ से अधिक देशों में फैल चुकी है। अल्हम्दुलिल्लाह। अब भी बड़ी मुख़ालिफ़त का दौर जारी है लेकिन अल्लाह तआला सच्चाई को ग़ल्बा प्रदान कर रहा है। और अल्लाह की कृपा से लाखों लोग हर साल मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब के हाथ पर बैअत करके अहमदिया मुस्लिम जमाअत में दाख़िल हो रहे हैं। अल्हम्दुलिल्लाह

वह देता है बन्दों को अपने हिदायत
दिखाता है हाथों पे उनके करामत
है फ़रियाद मज़्लूम की सुनने वाला
सदाक़त का करता है वह बोलबाला

(कलाम-ए-महमूद)

⊙ हमारा ख़ुदा बहुत मुहब्बत करने वाला ख़ुदा है

हमारे ख़ुदा का एक नाम 'अल-वदूद' भी है जिसका अर्थ है बहुत मुहब्बत करने वाला। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ○ (ھود آیت ۹۱)

तुम अपने रब्ब से क्षमा चाहो और फिर उसकी ओर पूर्णत: झुको। मेरा रब्ब नि:सन्देह बार-बार रहम करने वाला और बहुत ही मुहब्बत करने वाला है। सूर: बुरूज़ में फ़रमाया:-

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝ (البروج آیت ۱۵)

वह बहुत क्षमा करने वाला है और अत्यन्त मुहब्बत करने वाला है।

इन्सान चाहे कितना ही गुनहगार हो ख़ुदा तआला की रहमत से मायूस न हो। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○ (الزمر:۵۴)

हे रसूल ! तू उनको हमारी ओर से कह दे कि हे मेरे भक्तो जिन्होंने अपनी इच्छाओं का दमन करके अपनी जान पर ज़ुल्म किया है अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। नि:सन्देह अल्लाह सब गुनाह क्षमा कर देता है। नि:सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला है और बार-बार रहम करने वाला है।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि:-

अल्लाह तआला उसकी तरफ़ बार-बार झुकने वालों और पाकीज़गी अपनाने वालों से मुहब्बत करता है। (अल-बक़र आयत 223)

तक़्वा अपनाने वालों से मुहब्बत करता है। (अल-तौब: आयत नं. 9)

एहसान करने वालों से मुहब्बत करता है (अल-बक़र: आयत नं. 196)

न्याय करने वालों से मुहब्बत करता है। (अल-माइद: आयत नं. 43)

सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है (आले-इमरान आयत न. 147)

विश्वास करने वालों से मुहब्बत करता है(आले-इमरान आयत न. 160)

वे महान भक्त जो ख़ुदा की मर्ज़ी में खोए जाते हैं उनके साथ अल्लाह तआला विशेष तौर पर सहानुभूति का व्यवहार करता है जैसा कि वह क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है कि

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ
وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ (البقرہ آیت ۲۰۸)

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह तआला की रिज़ा पाने के लिए अपनी जान को बेच ही डालते हैं अल्लाह अपने ऐसे निश्छल भक्तों पर बड़ी सहानुभूति करने वाला है।

जैसा कि अल्लाह तआला हमेशा अपने रसूलों के द्वारा दुनिया को अपनी तरफ़ बुलाता रहा है। मौजूदा नास्तिकता (वस्तुवाद) के युग में भी उसने हमें सैयदना व मौलाना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे प्रेमी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा हमें अपनी तरफ़ बुलाया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बड़े दर्द भरे अन्दाज़ में अपनी किताब कश्ती-नूह में फ़रमाते हैं:-

हमारे ख़ुदा में अनगिनत चमत्कार हैं मगर वही देखते हैं जो पूर्ण सच्चाई और वफादारी से उसी के हो गये हैं। वह दूसरों पर जो उसकी शक्तियों पर विश्वास नहीं रखते और उसके सच्चे वफ़ादार नहीं हैं। वह चमत्कार प्रकट नहीं करता। कितना अभागा वह मनुष्य है जिसको अब तक यह ज्ञात नहीं कि उसका एक ख़ुदा है जो हर चीज़ पर समर्थ है। हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा है हमारे परम आनन्द हमारे ख़ुदा में हैं क्योंकि हमने उसको देखा और हर एक सौन्दर्य उसमें पाया। यह धन लेने के योग्य है चाहे जान देने से मिले और यह रत्न खरीदने के योग्य है चाहे तमाम् अस्तित्व खोने से प्राप्त हो। हे वंचित रहने वालो ! उस झरने की ओर दौड़ो कि वह तम्हें तृप्त करेगा। यह ज़िन्दगी का झरना है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ और किस तरह इस शुभ सन्देश को लोगों के दिलों में बिठा दूँ। किस ढोल से मैं बाज़ारों में मुनादी करूँ कि

तुम्हारा यह ख़ुदा है ताकि लोग सुन लें और किस दवा से मैं उपचार करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।

(कश्ती-नूह पृ 26, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 19 पृ 21,22)

अन्त में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक प्यारी हदीस प्रस्तुत करता हूँ जो हदीस की किताब सहीह मुस्लिम किताबुत्तौबः से ली उम्मत है जिसका हिन्दी अनुवाद यह है किः-

हज़रत अबू हुरैरः रज़ियल्लाहु अल्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं अपने भक्त से उसकी सुधारणा के अनुसार व्यवहार करता हूँ जो वह मेरे बारे में रखता है। जहाँ भी मेरी चर्चा करता है मैं उसके साथ होता हूँ। ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला अपने भक्त की तौबः पर इतना प्रसन्न होता है कि इतना वह व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं होता जिसे वीरान जंगल में अपनी गुमशुदा ऊँटनी मिल जाय। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो व्यक्ति बालिश्त (एक वित्ती) मेरे निकट आता है तो मैं उसके एक गज़ निकट आता हूँ। अगर वह एक हाथ मेरे निकट आता है तो मैं उसके दो हाथ निकट आ जाता हूँ और जब वह मेरी ओर चलकर आता है तो मैं उसकी ओर दौड़ कर जाता हूँ।

(मुस्लिम किताबुत्तौबः बाब फ़िल्हज़्ज़ अलत्तौबः, हदीक़तुस्सालिहीन हदीस नं. 68)

गुनाहों को बख़्शिश से है ढाँप देता
ग़रीबों को रहमत से है थाम लेता।
यही रात दिन अब तो मेरी सदा है
यह मेरा खुदा है यह मेरा ख़ुदा है।

(कलाम-ए-महमूद)